OPEN ACCESS

Int. Jr. of Contemp. Res. in Multi. *PEER-REVIEWED JOURNAL* *Volume 5 Issue 2 [Mar- Apr] Year 2026*

Research Article

ग्रामीण संस्कृति एवं जातिगत कार्यशैली में परिवर्तन: परंपरागत एवं आधुनिक प्रतिमानों का तुलनात्मक अध्ययन

डॉ. गुन्जन त्रिपाठी

सहायक प्राध्यापक, समाजशास्त्र विभाग, आदर्श कन्या स्नातकोत्तर महाविद्यालय, जियापुर, बरुआ-जलांकी, टाण्डा, अम्बेडकर नगर, (डॉ. राममनोहर लोहिया अवध विश्वविद्यालय) अयोध्या, उत्तर प्रदेश, भारत

Corresponding Author: *डॉ. गुन्जन त्रिपाठी

DOI: https://doi.org/10.5281/zenodo.19064124

सारांश

ग्रामीण समाज में संस्कृति और जातिगत कार्यशैली ऐतिहासिक रूप से परस्पर संबद्ध रही है, जहाँ जाति के आधार पर श्रम विभाजन और पेशागत संरचना सामाजिक संगठन का प्रमुख आधार मानी जाती रही है। किंतु आधुनिकीकरण, नगरीकरण, शिक्षा के प्रसार तथा बाजार अर्थव्यवस्था के विस्तार के परिणामस्वरूप इस पारंपरिक व्यवस्था में उल्लेखनीय परिवर्तन हुए हैं। प्रस्तुत अध्ययन का उद्देश्य ग्रामीण एवं नगरीय संदर्भ में जातिगत कार्यशैली के परंपरागत तथा आधुनिक प्रतिमानों का तुलनात्मक विश्लेषण करना है। उक्त अध्ययन में ग्रामीण एवं नगरीय क्षेत्रों के कुल 180 उत्तरदाताओं से सर्वेक्षण, अनुसूची एवं असंरचित साक्षात्कार के माध्यम से प्राथमिक आंकड़े संकलित किए गए हैं, जबकि द्वितीयक स्रोतों में सरकारी आंकड़ों, पुस्तकों, शोध पत्र एवं आलेखों आदि का उपयोग किया गया है। प्रस्तुत अध्ययन के निष्कर्ष संकेत करते हैं कि ग्रामीण क्षेत्रों में परंपरागत पेशों की निरंतरता अभी भी विद्यमान है, किंतु शिक्षा, तकनीकी संसाधनों की उपलब्धता और नगरीय संपर्क के कारण पेशागत गतिशीलता बढ़ रही है। नगरीय क्षेत्रों में जातिगत बाध्यता अपेक्षाकृत कम तथा पेशागत विविधता अधिक पाई गई। इस प्रकार अध्ययन द्वारा यह स्पष्ट होता है कि परंपरा और आधुनिकता के मध्य अंतःक्रिया के परिणामस्वरूप जातिगत कार्यशैली में संरचनात्मक एवं सांस्कृतिक परिवर्तन हो रहे हैं, जो ग्रामीण समाज की बदलती सामाजिक-आर्थिक गतिशीलता को प्रतिबिंबित करते हैं।

Manuscript Information

- **ISSN No:** 2583-7397
- **Received:** 08-01-2026
- **Accepted:** 25-02-2026
- **Published:** 17-03-2026
- **IJCRM:**5(2); 2026: 210-217
- **©2026, All Rights Reserved**
- **Plagiarism Checked:** Yes
- **Peer Review Process:** Yes

How to Cite this Article

डॉ. गुन्जन त्रिपाठी. सहायक प्राध्यापक, समाजशास्त्र विभाग, आदर्श कन्या स्नातकोत्तर महाविद्यालय, जियापुर, बरुआ-जलांकी, टाण्डा, अम्बेडकर नगर, उत्तर प्रदेश, भारत. Int J Contemp Res Multidiscip. 2026;5(2):210-217.

Access this Article Online

www.multiarticlesjournal.com

मूल शब्द: ग्रामीण संस्कृति, जातिगत कार्यशैली, पेशागत गतिशीलता, आधुनिकीकरण, ग्रामीण–नगरीय अंतर

© 2026 डॉ. गुन्जन त्रिपाठी. This is an open-access article distributed under the terms of the Creative Commons Attribution 4.0 International License (CC BY NC ND).https://creativecommons.org/licenses/by/4.0/

1. परिचय

भारतीय ग्रामीण समाज हमेशा से अपनी विशिष्ट सांस्कृतिक संरचना, सामुदायिक जीवन तथा जाति-आधारित सामाजिक संगठनों के कारण लंबे समय तक एक स्थिर एवं परंपरागत सामाजिक व्यवस्था के रूप में जाना जाता रहा है। ग्रामीण संस्कृति में पारिवारिक संबंधों, धार्मिक आस्थाओं, रीति-रिवाजों तथा सामूहिकता का विशेष महत्व रहा है, जिसके भीतर जाति न केवल सामाजिक पहचान का आधार रही है बल्कि आर्थिक एवं पेशागत जीवन का नियामक तत्व भी रही है। परंपरागत भारतीय समाज में श्रम विभाजन मुख्यतः जाति व्यवस्था पर आधारित था, जहाँ विभिन्न जातियों के लिए विशिष्ट पेशे निर्धारित थे और यह पेशागत संरचना पीढ़ी दर पीढ़ी हस्तांतरित होती रही। इस प्रकार जाति और जातिगत आधारित पेशों का घनिष्ठ संबंध ग्रामीण सामाजिक-सांस्कृतिक जीवन की केंद्रीय विशेषता को दर्शाता है।

परंपरागत ग्रामीण समाज में जाति और पेशों के इस संबंध का एक प्रमुख स्वरूप जजमानी व्यवस्था के रूप में विद्यमान था, जिसमें विभिन्न जातियाँ पारस्परिक निर्भरता के आधार पर सेवाएँ प्रदान करती थीं। इस व्यवस्था में कृषक या जजमान तथा सेवा प्रदाता जातियों के मध्य स्थायी आर्थिक और सामाजिक संबंध स्थापित होते थे, जो पीढ़ी दर पीढ़ी संचरित होते रहे। जजमानी व्यवस्था ने ग्रामीण समुदाय में कार्य विभाजन, सामाजिक एकता तथा आर्थिक परस्परता को बनाए रखने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई, किंतु इसके साथ ही इसने सामाजिक स्तरीकरण और जातिगत असमानता को भी सुदृढ़ किया।

समाजशास्त्रीय दृष्टिकोण से देखा जाए तो जातिगत कार्यशैली ने ग्रामीण समुदाय में सामाजिक स्थिरता और कार्य विभाजन को सुनिश्चित किया, किंतु इसके साथ ही सामाजिक स्तरीकरण और असमानता को भी स्थायित्व प्रदान किया। आधुनिक काल में औद्योगीकरण, नगरीकरण, शिक्षा के प्रसार, संचार क्रांति तथा बाजार अर्थव्यवस्था के विस्तार ने इस पारंपरिक संरचना को चुनौती दी है। विशेषतः शिक्षा और तकनीकी विकास ने व्यक्तियों को पारंपरिक पेशागत सीमाओं से बाहर निकलने तथा वैकल्पिक रोजगारों को अपनाने के अवसर प्रदान किए हैं, जिसके परिणामस्वरूप पेशागत गतिशीलता और सामाजिक परिवर्तन की प्रक्रिया तीव्र हुई है। परिणामस्वरूप जजमानी व्यवस्था जैसी पारंपरिक व्यवस्थाओं का क्रमिक क्षरण भी दृष्टिगोचर होता है।

आधुनिकीकरण के प्रभाव से ग्रामीण संस्कृति में बहुआयामी परिवर्तन दृष्टिगोचर हो रहे हैं। एक ओर पारंपरिक मूल्य एवं सांस्कृतिक प्रथाएँ अभी भी ग्रामीण जीवन का महत्वपूर्ण हिस्सा बनी हुई हैं, वहीं दूसरी ओर आधुनिक जीवन शैली, नगरीय संपर्क और संचार माध्यमों के प्रसार ने सांस्कृतिक व्यवहार तथा सामाजिक संबंधों में नवीनता का समावेश किया है। विशेष रूप से जातिगत कार्यशैली के संदर्भ में यह देखा जा रहा है कि परंपरागत पेशों की बाध्यता धीरे-धीरे शिथिल हो रही है और युवा पीढ़ी शिक्षा, कौशल तथा आर्थिक आकांक्षाओं के आधार पर नए पेशों को अपनाने की ओर अग्रसर हैं। नगरीय क्षेत्रों में यह प्रवृत्ति अपेक्षाकृत अधिक स्पष्ट है, जहाँ पेशागत चयन में जाति की भूमिका सीमित होती जा रही है।

इसी संदर्भ में ग्रामीण एवं नगरीय क्षेत्रों के मध्य जातिगत कार्यशैली और सांस्कृतिक परिवर्तन की प्रकृति एवं स्तर का तुलनात्मक अध्ययन अत्यंत प्रासंगिक हो जाता है। तुलनात्मक दृष्टिकोण से यह समझा जा सकता है कि परंपरा और आधुनिकता के मध्य अंतःक्रिया किस प्रकार विभिन्न सामाजिक परिवेशों में भिन्न-भिन्न रूपों में प्रकट होती है। प्रस्तुत अध्ययन का उद्देश्य इसी परिवर्तनशील प्रक्रिया का विश्लेषण करते हुए ग्रामीण संस्कृति एवं जातिगत कार्यशैली में परंपरागत और आधुनिक प्रतिमानों के अंतर्संबंध को स्पष्ट करना है। यह अध्ययन न केवल सामाजिक परिवर्तन की दिशा को समझने में सहायक होगा, बल्कि ग्रामीण समाज की बदलती आर्थिक एवं सांस्कृतिक संरचना के व्यापक समाजशास्त्रीय विमर्श में भी महत्वपूर्ण योगदान प्रदान करेगा।

ग्रामीण संस्कृति एवं जातिगत कार्यशैली: सैद्धांतिक परिप्रेक्ष्य

ग्रामीण संस्कृति एवं जातिगत कार्यशैली को समझने के लिए समाजशास्त्रीय सिद्धांत महत्वपूर्ण विश्लेषणात्मक आधार प्रदान करते हैं। भारतीय ग्रामीण समाज ऐतिहासिक रूप से जाति-आधारित श्रम विभाजन, पारंपरिक पेशागत संरचना तथा सामुदायिक जीवन की विशेषताओं से युक्त रहा है। इस संदर्भ में विभिन्न समाजशास्त्रियों के दृष्टिकोण जातिगत कार्यशैली और ग्रामीण परिवर्तन की प्रकृति को समझने में सहायक सिद्ध होते हैं।

एमिल दुर्खीम का दृष्टिकोण: दुर्खीम की श्रम-विभाजन संबंधी अवधारणा पारंपरिक ग्रामीण समाज की संरचना को समझने में अत्यंत उपयोगी है। उनके अनुसार पारंपरिक समाज "यांत्रिक एकता" पर आधारित होते हैं, जहाँ समान विश्वास, परंपराएँ और सामूहिक चेतना सामाजिक एकजुटता को बनाए रखते हैं। भारतीय ग्रामीण समाज में जाति-आधारित पेशागत संरचना इसी प्रकार की एकता का उदाहरण प्रस्तुत करती है। प्रत्येक जाति का एक निश्चित सामाजिक और आर्थिक कार्य था, जिससे सामाजिक संतुलन बना रहता था। यह श्रम विभाजन केवल आर्थिक आवश्यकता नहीं था, बल्कि नैतिक व्यवस्था का अंग भी था। जजमानी व्यवस्था इस संरचना का व्यावहारिक रूप थी, जिसने पारस्परिक निर्भरता को संस्थागत रूप दिया। हालांकि आधुनिकता के प्रभाव से जैविक एकता की दिशा में संक्रमण दिखाई देता है, जहाँ व्यक्तियों की भूमिकाएँ कौशल और योग्यता पर आधारित होने लगती हैं। इस प्रकार दुर्खीम का दृष्टिकोण जातिगत कार्यशैली को सामाजिक एकता के ढाँचे में समझने में सहायक है।

गोविन्द सदाशिव घुर्ये का दृष्टिकोण: घुर्ये ने जाति को भारतीय सामाजिक संरचना की केंद्रीय संस्था माना है। उनके अनुसार जाति केवल सामाजिक स्तरीकरण का तंत्र नहीं, बल्कि सांस्कृतिक निरंतरता, धार्मिक आस्थाओं और सामाजिक संगठन का आधार है। ग्रामीण समाज में जातिगत कार्यशैली ने पारंपरिक पेशों की रक्षा तथा सामाजिक भूमिकाओं की स्पष्टता को बनाए रखने में महत्वपूर्ण योगदान दिया। इससे सामुदायिक जीवन में स्थिरता और पारस्परिक निर्भरता बनी रही। घुर्ये ने यह भी स्पष्ट किया कि जाति व्यवस्था में अंतर्निहित पदानुक्रम सामाजिक असमानता को स्थायित्व प्रदान करता है। आधुनिक शिक्षा, औद्योगीकरण और नगरीकरण के प्रभाव से जाति की पेशागत कठोरता में शिथिलता आई है, जिससे पेशागत गतिशीलता और सामाजिक परिवर्तन की प्रक्रिया तेज हुई है। इस प्रकार घुर्ये का विश्लेषण जातिगत कार्यशैली को परंपरा और परिवर्तन के मध्य स्थित एक सामाजिक संस्था के रूप में समझने में सहायक सिद्ध होता है।

© 2026 डॉ. गुन्जन त्रिपाठी. This is an open-access article distributed under the terms of the Creative Commons Attribution 4.0 International License (CC BY NC ND).https://creativecommons.org/licenses/by/4.0/

कार्ल मार्क्स का दृष्टिकोण: मार्क्स का संघर्षवादी दृष्टिकोण सामाजिक संरचना को आर्थिक आधार से संचालित मानता है। उनके अनुसार उत्पादन संबंध और संसाधनों पर नियंत्रण समाज में शक्ति, वर्ग विभाजन और असमानता को निर्धारित करते हैं। भारतीय संदर्भ में जाति व्यवस्था वर्ग से भिन्न होते हुए भी श्रम विभाजन और आर्थिक निर्भरता के माध्यम से सामाजिक विषमता को स्थायित्व प्रदान करती रही है। जाति-आधारित पेशागत संरचना ने विशेष रूप से निम्न जातियों की पेशागत गतिशीलता को सीमित किया और संसाधनों तक उनकी पहुँच को नियंत्रित किया। यह व्यवस्था सामाजिक स्तरीकरण के पुनरुत्पादन का माध्यम बनी रही। औद्योगीकरण, शिक्षा और बाजार अर्थव्यवस्था के विस्तार ने इस पारंपरिक संरचना को चुनौती दी है, जिससे पेशागत भूमिकाओं में परिवर्तन और गतिशीलता संभव हुई है। मार्क्स का दृष्टिकोण जातिगत कार्यशैली को शक्ति, संसाधन और असमानता के व्यापक संदर्भ में समझने का सैद्धांतिक आधार प्रदान करता है।

एम. एन. श्रीनिवास का दृष्टिकोण: एम. एन. श्रीनिवास ने भारतीय समाज में परिवर्तन को समझाने के लिए संस्कृतिकरण, पश्चिमीकरण और आधुनिकीकरण जैसी अवधारणाएँ प्रस्तुत कीं। उनके अनुसार शिक्षा, नगरीकरण, लोकतांत्रिक संस्थाओं और संचार माध्यमों के विस्तार ने पारंपरिक जातिगत पेशों की अनिवार्यता को कमजोर किया है। संस्कृतिकरण की प्रक्रिया के माध्यम से निम्न जातियाँ उच्च जातियों की जीवनशैली और व्यवहार को अपनाकर सामाजिक प्रतिष्ठा अर्जित करने का प्रयास करती हैं, जिससे सामाजिक गतिशीलता संभव होती है। ग्रामीण समाज में जजमानी व्यवस्था का क्षरण तथा पेशागत विविधीकरण इसी परिवर्तनशील प्रक्रिया के संकेत हैं। युवा पीढ़ी शिक्षा और कौशल के आधार पर वैकल्पिक रोजगारों की ओर अग्रसर हो रही है। श्रीनिवास का दृष्टिकोण यह स्पष्ट करता है कि जातिगत कार्यशैली स्थिर नहीं, बल्कि सामाजिक परिवर्तन की गतिशील प्रक्रिया से निरंतर प्रभावित होती है।

योगेन्द्र सिंह का दृष्टिकोण: योगेन्द्र सिंह ने भारतीय समाज में परंपरा और आधुनिकता के अंतर्संबंध को सामाजिक परिवर्तन की केंद्रीय प्रक्रिया के रूप में व्याख्यायित किया। उनके अनुसार आधुनिकीकरण रैखिक या पूर्णतः परंपरा-विरोधी नहीं है, बल्कि एक समन्वित प्रक्रिया है जिसमें पारंपरिक मूल्य और आधुनिक संस्थाएँ सह-अस्तित्व में रहती हैं। ग्रामीण समाज में सांस्कृतिक निरंतरता और नई आर्थिक आकांक्षाओं का सह-अस्तित्व इसी द्वैत को दर्शाता है। जातिगत कार्यशैली में परिवर्तन भी इसी अंतःक्रिया का परिणाम है, जहाँ एक ओर पारंपरिक पेशों की आंशिक निरंतरता बनी रहती है, वहीं दूसरी ओर शिक्षा, बाजार और तकनीकी संसाधनों के प्रभाव से पेशागत गतिशीलता बढ़ती है। सिंह का दृष्टिकोण ग्रामीण परिवर्तन को संतुलित और बहुआयामी प्रक्रिया के रूप में समझने में सहायक है।

विलियम एच. वाइजर का दृष्टिकोण: विलियम एच. वाइजर ने जजमानी व्यवस्था का नृवंशात्मक अध्ययन प्रस्तुत करते हुए ग्रामीण समाज में जातिगत कार्यशैली की संरचना को स्पष्ट किया। उनके अनुसार जजमानी प्रणाली सेवा-प्रदाता और जजमान जातियों के मध्य स्थायी, पारंपरिक और संस्थागत संबंधों पर आधारित थी। यह केवल आर्थिक लेन-देन नहीं, बल्कि सामाजिक दायित्व और पारस्परिक निर्भरता का तंत्र था। इस व्यवस्था ने ग्रामीण समाज में श्रम विभाजन को स्थायित्व दिया और समुदाय के भीतर सहयोग तथा संतुलन बनाए रखा। किंतु यह संबंध समानता पर आधारित नहीं था, इसमें स्पष्ट पदानुक्रम और असमानता निहित थी। आधुनिक शिक्षा, नगरीकरण और बाजार अर्थव्यवस्था के विस्तार के साथ यह पारंपरिक प्रणाली कमजोर होने लगी। वाइजर का दृष्टिकोण जातिगत कार्यशैली को ग्रामीण सामाजिक संरचना की संगठित किंतु पदानुक्रमित व्यवस्था के रूप में समझने में महत्वपूर्ण है।

ऑस्कर लेविस का दृष्टिकोण: ऑस्कर लेविस ने उत्तर भारतीय ग्रामीण जीवन का अध्ययन करते हुए जाति, परिवार और आर्थिक संरचना के अंतर्संबंधों को विश्लेषित किया। उनके अनुसार ग्रामीण समाज एक घनिष्ठ सामाजिक इकाई है, जहाँ जातिगत पहचान पेशा, सामाजिक संबंध और शक्ति संरचना को प्रभावित करती है। पेशागत संरचना केवल परंपरा का परिणाम नहीं, बल्कि संसाधनों की उपलब्धता और आर्थिक अवसरों से भी जुड़ी होती है। लेविस ने यह भी इंगित किया कि आधुनिकीकरण, शिक्षा और नगरीय संपर्क के प्रभाव से ग्रामीण युवाओं की आकांक्षाएँ परिवर्तित हो रही हैं। इससे पारंपरिक जातिगत पेशों की अनिवार्यता कमजोर पड़ रही है और पेशागत विविधता बढ़ रही है। उनका दृष्टिकोण ग्रामीण समाज में निरंतरता और परिवर्तन के सह-अस्तित्व को समझने में सहायक है।

2. साहित्य समीक्षा

देशपांडे (2003)[2] सतीश देशपांडे अपनी पुस्तक Contemporary India: A Sociological View में समकालीन भारत में जाति और सामाजिक असमानता की निरंतरता का समाजशास्त्रीय विश्लेषण प्रस्तुत करते हैं। वे तर्क देते हैं कि आर्थिक उदारीकरण, वैश्वीकरण और लोकतांत्रिक विस्तार के बावजूद जाति-आधारित संरचनाएँ भारतीय समाज में गहराई से अंतर्निहित बनी हुई हैं। उच्च शिक्षा, रोजगार, राजनीतिक प्रतिनिधित्व और भारतीय मध्यम वर्ग की संरचना में जातिगत विषमताएँ स्पष्ट रूप से दिखाई देती हैं। देशपांडे के अनुसार, औपचारिक समान अवसरों के बावजूद सामाजिक पूंजी, सांस्कृतिक पूंजी और ऐतिहासिक विशेषाधिकार उच्च जातियों को संरचनात्मक लाभ प्रदान करते हैं, जिससे वास्तविक सामाजिक समानता अधूरी रह जाती है। ग्रामीण संदर्भ में सामाजिक प्रतिष्ठा, भूमि स्वामित्व और संसाधनों तक पहुँच जाति से गहराई से जुड़ी रहती है। उनका निष्कर्ष है कि आधुनिकता और परंपरा के सह-अस्तित्व में जाति नई संस्थागत व्यवस्थाओं के भीतर पुनर्संरचित होकर प्रभावी रूप से कार्य करती है।

डिर्क्स (2001)[3] निकोलस डिर्क्स अपनी प्रसिद्ध कृति Castes of Mind: Colonialism and the Making of Modern India में यह प्रतिपादित करते हैं कि आधुनिक भारत में जाति की संरचना औपनिवेशिक प्रशासनिक प्रक्रियाओं से गहराई से प्रभावित हुई। उनका तर्क है कि जाति को एक स्थिर और कठोर सामाजिक श्रेणी के रूप में स्थापित करने में औपनिवेशिक जनगणना, वर्गीकरण प्रणाली और प्रशासनिक नीतियों की महत्वपूर्ण भूमिका रही। डिर्क्स के अनुसार जाति केवल पारंपरिक सामाजिक संस्था नहीं थी, बल्कि औपनिवेशिक शासन ने इसे राजनीतिक और प्रशासनिक उपकरण के

© 2026 डॉ. गुन्जन त्रिपाठी. This is an open-access article distributed under the terms of the Creative Commons Attribution 4.0 International License (CC BY NC ND).https://creativecommons.org/licenses/by/4.0/

रूप में पुनर्गठित किया। इस ऐतिहासिक विश्लेषण से यह स्पष्ट होता है कि वर्तमान ग्रामीण पेशागत संरचना और जातिगत पहचान ऐतिहासिक सत्ता-प्रक्रियाओं का परिणाम हैं। जाति और पेशे के संबंध को समझने के लिए केवल सांस्कृतिक या धार्मिक आयाम पर्याप्त नहीं हैं, बल्कि ऐतिहासिक-राजनीतिक संदर्भ को भी समाहित करना आवश्यक है। डिर्क्स का अध्ययन ग्रामीण समाज में जातिगत संरचनाओं की ऐतिहासिक निरंतरता और आधुनिक पुनर्रचना को समझने में अत्यंत उपयोगी सिद्ध होता है।

थोराट और न्यूमैन (2010)[15] थोराट और न्यूमैन ने Blocked by caste: Economic discrimination in modern India में श्रम बाजार और शैक्षिक अवसरों में जातिगत भेदभाव का अनुभवजन्य अध्ययन प्रस्तुत किया है। उनका शोध फील्ड एक्सपेरिमेंट और डेटा विश्लेषण पर आधारित है, जिससे यह प्रमाणित होता है कि समान योग्यता होने पर भी दलित समुदाय के व्यक्तियों को रोजगार और अवसरों में भेदभाव का सामना करना पड़ता है। यह अध्ययन दर्शाता है कि आधुनिक बाजार संरचना स्वतः निष्पक्ष नहीं होती, बल्कि सामाजिक पूर्वाग्रह उसमें अंतर्निहित रहते हैं। ग्रामीण और शहरी दोनों संदर्भों में जातिगत पहचान आर्थिक गतिशीलता को प्रभावित करती है। पेशागत परिवर्तन और शिक्षा के विस्तार के बावजूद संरचनात्मक असमानता कायम रहती है। यह शोध स्पष्ट करता है कि सामाजिक न्याय की नीतियाँ केवल कानूनी प्रावधानों तक सीमित न रहकर व्यवहारिक स्तर पर लागू होनी चाहिए। ग्रामीण समाज में पारंपरिक पेशागत सीमाओं के कमजोर पड़ने के बावजूद अवसरों की असमान उपलब्धता सामाजिक विषमता को पुनरुत्पादित करती है।

जोधका (2012)[7] सुरिंदर एस. जोधका ने अपनी पुस्तक Caste में समकालीन ग्रामीण भारत में जाति के रूपांतरण का विश्लेषण किया है। वे तर्क देते हैं कि उदारीकरण, बाजार विस्तार और शिक्षा के प्रसार ने पारंपरिक जजमानी और पेशागत बंधनों को कमजोर अवश्य किया है, किंतु जाति सामाजिक पहचान और वैवाहिक संबंधों में अब भी प्रभावी है। ग्रामीण अर्थव्यवस्था में गैर-कृषि कार्यों के विस्तार से पेशागत गतिशीलता बढ़ी है, परंतु सामाजिक पदानुक्रम पूरी तरह समाप्त नहीं हुआ। जोधका यह भी इंगित करते हैं कि राजनीतिक सशक्तिकरण और लोकतांत्रिक प्रक्रियाओं ने निम्न जातियों को नई आवाज दी है। तथापि सामाजिक और सांस्कृतिक स्तर पर असमानता बनी रहती है। उनका अध्ययन दर्शाता है कि जाति समाप्त होने के बजाय नए सामाजिक और आर्थिक संदर्भों में पुनर्गठित हो रही है। यह विश्लेषण ग्रामीण समाज में परंपरा और आधुनिकता के अंतर्संबंध को समझने में अत्यंत महत्वपूर्ण है।

कृष्ण (2004)[8] अनिरुद्ध कृष्ण का शोध ग्रामीण भारत में गरीबी, सामाजिक पूंजी और आर्थिक गतिशीलता पर केंद्रित है। उनके लेख Escaping poverty and becoming poor: Who gains, who loses, and why? में यह विश्लेषण किया गया है कि कौन-से कारक व्यक्तियों और परिवारों को गरीबी से बाहर निकालने या पुनः उसमें फँसाने के लिए उत्तरदायी होते हैं। कृष्ण के अनुसार जातिगत स्थिति, सामुदायिक नेटवर्क और स्थानीय संस्थागत समर्थन आर्थिक अवसरों को प्रभावित करते हैं। सामाजिक पूंजी, जैसे पारस्परिक सहयोग, स्थानीय नेतृत्व और सामुदायिक संगठनों की भूमिका, ग्रामीण समाज में गतिशीलता के अवसर प्रदान कर सकती है। यह अध्ययन दर्शाता है कि पेशागत परिवर्तन केवल व्यक्तिगत योग्यता पर निर्भर नहीं, बल्कि सामाजिक संरचना और नेटवर्क पर भी आधारित है। जातिगत पहचान कई बार अवसरों को सीमित करती है, जबकि मजबूत सामुदायिक समर्थन आर्थिक उन्नति को संभव बनाता है। इस प्रकार कृष्ण का अध्ययन ग्रामीण सामाजिक परिवर्तन को संरचनात्मक और सामुदायिक दोनों दृष्टिकोणों से समझने में सहायक है।

सुब्रमणियन (2019)[14] अजंता सुब्रमणियन ने The caste of merit: Engineering education in India में उच्च शिक्षा संस्थानों, विशेषकर तकनीकी शिक्षा के क्षेत्र में जातिगत असमानता का विश्लेषण किया है। उनका तर्क है कि 'मेरिट' की अवधारणा वस्तुतः सामाजिक और सांस्कृतिक पूंजी से निर्मित होती है, जो ऐतिहासिक रूप से उच्च जातियों के पक्ष में कार्य करती है। आधुनिक संस्थागत ढाँचे, जो समान अवसर का दावा करते हैं, वे भी कई बार जातिगत विशेषाधिकारों को पुनरुत्पादित करते हैं। यह अध्ययन दर्शाता है कि पेशागत गतिशीलता और शिक्षा के विस्तार के बावजूद संरचनात्मक असमानता बनी रहती है। ग्रामीण पृष्ठभूमि से आने वाले छात्रों के लिए संसाधनों की कमी और सामाजिक पूंजी का अभाव अतिरिक्त बाधाएँ उत्पन्न करता है। सुब्रमणियन का विश्लेषण यह स्पष्ट करता है कि आधुनिकता स्वतः समानता नहीं लाती, बल्कि ऐतिहासिक असमानताएँ नए रूपों में उपस्थित रहती हैं। यह दृष्टिकोण ग्रामीण और शहरी दोनों संदर्भों में जाति और पेशागत अवसरों के अंतर्संबंध को समझने में महत्वपूर्ण योगदान देता है।

3. शोध उदेश्य

- ग्रामीण समाज में जातिगत कार्यशैली की पारंपरिक संरचना का अध्ययन करना।
- आधुनिकीकरण, शिक्षा और नगरीकरण के प्रभाव से जातिगत कार्यशैली में आए परिवर्तनों का विश्लेषण करना।
- ग्रामीण और नगरीय क्षेत्रों में जाति-आधारित पेशागत संरचना का तुलनात्मक अध्ययन करना।
- जजमानी व्यवस्था एवं पारंपरिक पेशागत संबंधों में हो रहे परिवर्तनों का परीक्षण करना।
- परंपरा और आधुनिकता के अंतःसंबंध के संदर्भ में ग्रामीण संस्कृति में हो रहे परिवर्तनों का विश्लेषण करना।

4. शोध प्रविधि

प्रस्तुत अध्ययन हेतु वर्णनात्मक तथा तुलनात्मक शोध प्रविधि का उपयोग किया गया है। वर्णनात्मक शोध प्रविधि के माध्यम से अध्ययन क्षेत्र में विद्यमान सामाजिक एवं सांस्कृतिक परिस्थितियों, ग्रामीण तथा नगरीय जीवन-शैली, तथा जातिगत कार्यशैली में हो रहे परिवर्तनों का यथार्थ एवं व्यवस्थित वर्णन किया गया है। इसके साथ ही तुलनात्मक शोध प्रविधि के द्वारा ग्रामीण एवं नगरीय क्षेत्रों के मध्य समानताओं और भिन्नताओं का विश्लेषण किया गया है। इस प्रविधि के माध्यम से यह समझने का प्रयास किया गया है कि पारंपरिक एवं आधुनिक प्रतिमानों के प्रभाव से ग्रामीण और नगरीय क्षेत्रों में सामाजिक संरचना तथा कार्यशैली में किस प्रकार परिवर्तन हो रहे हैं। इस प्रकार दोनों प्रविधियों के समन्वित प्रयोग से अध्ययन को अधिक व्यापक और विश्लेषणात्मक स्वरूप प्रदान किया गया है।

© 2026 डॉ. गुन्जन त्रिपाठी. This is an open-access article distributed under the terms of the Creative Commons Attribution 4.0 International License (CC BY NC ND).https://creativecommons.org/licenses/by/4.0/

अध्ययन क्षेत्र एवं नमूना चयन

प्रस्तुत अध्ययन के लिए उत्तर प्रदेश के अंबेडकरनगर जनपद की अकबरपुर तहसील का चयन उद्देश्यपरक नमूना विधि के आधार पर अध्ययन क्षेत्र के रूप में किया गया है। अध्ययन का उद्देश्य ग्रामीण एवं नगरीय क्षेत्रों के मध्य तुलनात्मक विश्लेषण करना है। इसके अंतर्गत अकबरपुर तहसील के तीन गाँवों तथा अकबरपुर नगर पालिका परिषद के तीन वार्डों का चयन स्तरीकृत यादृच्छिक नमूना विधि के आधार पर किया गया है। प्रत्येक चयनित गाँव से 30 उत्तरदाताओं का चयन किया गया, जिनमें 15 पुरुष तथा 15 महिलाएँ सम्मिलित हैं। इसी प्रकार प्रत्येक चयनित वार्ड से भी 30 उत्तरदाताओं का चयन किया गया, जिनमें 15 पुरुष एवं 15 महिलाएँ शामिल हैं। इस प्रकार तीन गाँवों से कुल 90 तथा तीन वार्डों से 90 उत्तरदाता प्राप्त हुए। परिणामस्वरूप अध्ययन में कुल 180 उत्तरदाताओं को सम्मिलित किया गया है, जिससे ग्रामीण एवं नगरीय क्षेत्रों के मध्य तुलनात्मक विश्लेषण के लिए संतुलित नमूना प्राप्त हो सके।

प्रदत्त संकलन विधि

प्रस्तुत अध्ययन में प्राथमिक एवं द्वितीयक दोनों प्रकार के स्रोतों से आँकड़ों का संकलन किया गया है। प्राथमिक आँकड़ों के संकलन हेतु सर्वेक्षण पद्धति का प्रयोग किया गया, जिसके अंतर्गत अनुसूची तथा असंरचित साक्षात्कार के माध्यम से आँकड़े एकत्र किए गए। अनुसूची में खुले एवं बंद दोनों प्रकार के प्रश्न शामिल किए गए थे, जिनके माध्यम से उत्तरदाताओं से जातिगत पेशों, पेशागत परिवर्तन तथा सांस्कृतिक व्यवहार से संबंधित जानकारी प्राप्त की गई। वहीं असंरचित साक्षात्कार के माध्यम से उत्तरदाताओं के अनुभवों, दृष्टिकोणों तथा सामाजिक परिवर्तनों के प्रति उनकी समझ को गहराई से जानने का प्रयास किया गया। इसके अतिरिक्त द्वितीयक स्रोतों के अंतर्गत पुस्तकों, शोध-पत्रों, सरकारी रिपोर्टों, जनगणना आँकड़ों तथा संबंधित लेखों का अध्ययन किया गया, जिससे अध्ययन के सैद्धांतिक एवं विश्लेषणात्मक आधार को सुदृढ़ बनाया जा सके।

उत्तरदाताओं की सामाजिक-आर्थिक पृष्ठभूमि

प्रस्तुत अध्ययन के अंतर्गत ग्रामीण एवं नगरीय दोनों क्षेत्रों से कुल 180 उत्तरदाताओं का चयन किया गया है, जिनमें पुरुष एवं महिला उत्तरदाताओं की समान भागीदारी सुनिश्चित की गई है। उत्तरदाताओं की सामाजिक-आर्थिक पृष्ठभूमि को समझने के लिए लिंग, आयु समूह, जाति श्रेणी, शिक्षा स्तर तथा पारिवारिक पेशे जैसे महत्वपूर्ण संकेतकों का विश्लेषण किया गया है। यह जानकारी अध्ययन क्षेत्र की सामाजिक संरचना तथा उत्तरदाताओं की जीवन-स्थितियों को समझने में सहायक सिद्ध होती है।

सारणी 1: लिंग के आधार पर उत्तरदाताओं का वितरण

लिंग	ग्रामीण	नगरीय	कुल
पुरुष	45	45	90
महिला	45	45	90
कुल	90	90	180

उपरोक्त सारणी से स्पष्ट होता है कि अध्ययन में ग्रामीण तथा नगरीय दोनों क्षेत्रों से पुरुष एवं महिला उत्तरदाताओं को समान संख्या में सम्मिलित किया गया है। प्रत्येक क्षेत्र से 45 पुरुष तथा 45 महिला उत्तरदाताओं का चयन किया गया है। इस प्रकार कुल 180 उत्तरदाताओं में 90 पुरुष और 90 महिलाएँ शामिल हैं।

सारणी 2: आयु समूह के आधार पर उत्तरदाताओं का वितरण

आयु समूह	ग्रामीण	नगरीय	कुल
18–30 वर्ष	25	30	55
31–45 वर्ष	30	28	58
46–60 वर्ष	22	20	42
60 वर्ष से अधिक	13	12	25
कुल	90	90	180

उक्त सारणी से स्पष्ट होता है कि अध्ययन में विभिन्न आयु वर्गों के उत्तरदाताओं को सम्मिलित किया गया है। 31–45 वर्ष आयु वर्ग के उत्तरदाताओं की संख्या सर्वाधिक 58 है, जो आर्थिक रूप से सक्रिय वर्ग का प्रतिनिधित्व करते हैं। 18–30 वर्ष आयु वर्ग के 55 उत्तरदाता युवा पीढ़ी का प्रतिनिधित्व करते हैं, जिनमें शिक्षा, आधुनिकता तथा नए पेशों को अपनाने की प्रवृत्ति अपेक्षाकृत अधिक पाई जाती है। 46–60 वर्ष आयु वर्ग के 42 उत्तरदाता मध्यम आयु वर्ग को दर्शाते हैं, जो पारंपरिक और आधुनिक दोनों प्रकार के अनुभवों से जुड़े होते हैं। इसके अतिरिक्त 60 वर्ष से अधिक आयु के 25 उत्तरदाता वरिष्ठ पीढ़ी का प्रतिनिधित्व करते हैं, जो पारंपरिक सामाजिक व्यवस्था, जातिगत पेशों तथा सांस्कृतिक मूल्यों के प्रति अधिक जुड़ाव रखते हैं। इस प्रकार विभिन्न आयु वर्गों की भागीदारी अध्ययन को पीढ़ीगत दृष्टिकोण से समझने में सहायक बनाती है।

सारणी 3: जाति श्रेणी के आधार पर उत्तरदाताओं का वितरण

जाति श्रेणी	ग्रामीण	नगरीय	कुल
अनुसूचित जाति	25	20	45
अनुसूचित जनजाति	5	3	8
अन्य पिछड़ा वर्ग	40	35	75
सामान्य वर्ग	20	32	52
कुल	90	90	180

प्रस्तुत सारणी से स्पष्ट होता है कि अध्ययन में विभिन्न जाति श्रेणियों के उत्तरदाताओं को सम्मिलित किया गया है। अन्य पिछड़ा वर्ग के उत्तरदाताओं की संख्या सर्वाधिक 75 है, जो ग्रामीण समाज की सामाजिक संरचना को प्रतिबिंबित करती है। अनुसूचित जाति के 45 उत्तरदाता भी पर्याप्त संख्या में उपस्थित हैं, जिससे जातिगत पेशों तथा सामाजिक परिवर्तन का विश्लेषण व्यापक रूप से किया जा सकता है। अनुसूचित जनजाति के 8 उत्तरदाता अपेक्षाकृत कम संख्या में हैं, किंतु उनका समावेश अध्ययन में सामाजिक विविधता को दर्शाता है। इसके अतिरिक्त सामान्य वर्ग के 52 उत्तरदाता भी अध्ययन में शामिल हैं, जिनकी संख्या नगरीय क्षेत्रों में अपेक्षाकृत अधिक पाई जाती है। इस प्रकार विभिन्न जाति समूहों की भागीदारी अध्ययन को अधिक समग्र और प्रतिनिधिक बनाती है।

© 2026 डॉ. गुन्जन त्रिपाठी. This is an open-access article distributed under the terms of the Creative Commons Attribution 4.0 International License (CC BY NC ND).https://creativecommons.org/licenses/by/4.0/

सारणी 4: शिक्षा स्तर के आधार पर उत्तरदाताओं का वितरण

शिक्षा स्तर	ग्रामीण	नगरीय	कुल
निरक्षर	18	8	26
प्राथमिक	22	12	34
माध्यमिक	25	20	45
स्नातक	15	28	43
स्नातकोत्तर	10	22	32
कुल	90	90	180

उपरोक्त सारणी से स्पष्ट होता है कि उत्तरदाताओं का शिक्षा स्तर ग्रामीण और नगरीय क्षेत्रों में भिन्नता दर्शाता है। ग्रामीण क्षेत्रों में निरक्षर 18 तथा प्राथमिक स्तर 22 तक शिक्षित उत्तरदाताओं की संख्या अपेक्षाकृत अधिक पाई जाती है। इसके साथ ही माध्यमिक स्तर तक शिक्षित ग्रामीण उत्तरदाताओं की संख्या 25 भी उल्लेखनीय है, जो यह संकेत देती है कि ग्रामीण क्षेत्रों में माध्यमिक शिक्षा का प्रसार धीरे-धीरे बढ़ रहा है। वहीं ग्रामीण क्षेत्रों में स्नातक स्तर के 15 और स्नातकोत्तर स्तर 10 के उत्तरदाता पाए गए। दूसरी ओर नगरीय क्षेत्रों में स्नातक स्तर के 28 तथा स्नातकोत्तर स्तर के 22 शिक्षित उत्तरदाताओं की संख्या अधिक है, जो वहाँ शिक्षा के बेहतर अवसरों और संसाधनों की उपलब्धता को दर्शाती है। इस प्रकार शिक्षा स्तर में यह अंतर ग्रामीण और नगरीय क्षेत्रों की सामाजिक-आर्थिक परिस्थितियों तथा पेशागत अवसरों की भिन्नता को स्पष्ट करता है।

सारणी 5: पारिवारिक पेशे के आधार पर उत्तरदाताओं का वितरण

पारिवारिक पेशा	ग्रामीण	नगरीय	कुल
कृषि	38	12	50
पारंपरिक जातिगत पे	20	8	28
व्यापार	10	18	28
सरकारी नौकरी	8	20	28
निजी नौकरी	9	22	31
अन्य	5	10	15
कुल	90	90	180

उपरोक्त सारणी से स्पष्ट होता है कि ग्रामीण एवं नगरीय क्षेत्रों में पारिवारिक पेशों की संरचना में उल्लेखनीय अंतर पाया जाता है। ग्रामीण क्षेत्रों में कृषि प्रमुख पारिवारिक पेशा है, जहाँ 38 उत्तरदाता कृषि कार्य से जुड़े हुए हैं। इसके अतिरिक्त 20 उत्तरदाता पारंपरिक जातिगत पेशों से संबंधित हैं, जो यह संकेत देता है कि ग्रामीण समाज में परंपरागत पेशागत संरचना अभी भी आंशिक रूप से विद्यमान है। इसके विपरीत नगरीय क्षेत्रों में कृषि से जुड़े उत्तरदाताओं की संख्या अपेक्षाकृत कम (12) पाई जाती है, जबकि निजी नौकरी (22) तथा सरकारी नौकरी (20) से जुड़े उत्तरदाताओं की संख्या अधिक है। व्यापार से जुड़े उत्तरदाताओं की संख्या भी नगरीय क्षेत्रों (18) में ग्रामीण क्षेत्रों (10) की तुलना में अधिक है। यह स्थिति दर्शाती है कि नगरीकरण, शिक्षा के प्रसार तथा बाजार आधारित अर्थव्यवस्था के विस्तार ने नगरीय क्षेत्रों में पेशागत विविधता को बढ़ावा दिया है। वहीं ग्रामीण क्षेत्रों में कृषि अभी भी आजीविका का प्रमुख आधार बनी हुई है, हालांकि पारंपरिक जातिगत पेशों से बाहर निकलकर अन्य रोजगारों की ओर प्रवृत्ति धीरे-धीरे बढ़ रही है। इस प्रकार सारणी यह संकेत करती है कि परंपरागत पेशागत संरचना में परिवर्तन की प्रक्रिया आरंभ हो चुकी है, जिसमें आधुनिक रोजगार अवसरों का प्रभाव विशेष रूप से नगरीय क्षेत्रों में अधिक स्पष्ट रूप से दिखाई देता है।

5. उदेश्य आधारित प्रदत्त विश्लेषण

सारणी 6: ग्रामीण क्षेत्रों में पारंपरिक जातिगत पेशों से जुड़े उत्तरदाताओं का वितरण

पारंपरिक पेशा	उत्तरदाताओं की संख्या	प्रतिशत
कृषि से संबंधित कार्य	32	35.6
कुम्हार	10	11.1
नाई	12	13.3
लोहार	8	8.9
धोबी	9	10.0
अन्य पारंपरिक पेशे	19	21.1
कुल	90	100

उपरोक्त सारणी ग्रामीण समाज में विद्यमान पारंपरिक जातिगत कार्यशैली की संरचना को स्पष्ट रूप से प्रदर्शित करती है। अध्ययन से यह ज्ञात होता है कि ग्रामीण क्षेत्रों में आज भी कुछ हद तक पारंपरिक पेशागत संरचना कायम है। 32 उत्तरदाता कृषि कार्य से जुड़े हुए हैं, जो ग्रामीण अर्थव्यवस्था का प्रमुख आधार माना जाता है। इसके अतिरिक्त कुम्हार, नाई, लोहार तथा धोबी जैसे पारंपरिक पेशों से जुड़े उत्तरदाता भी उल्लेखनीय संख्या में पाए गए। यह दर्शाता है कि जाति-आधारित श्रम विभाजन की परंपरा ग्रामीण समाज में पूरी तरह समाप्त नहीं हुई है, बल्कि परिवर्तित सामाजिक और आर्थिक परिस्थितियों के बीच आंशिक रूप से बनी हुई है। हालांकि आधुनिकता और आर्थिक परिवर्तनों के प्रभाव से इन पारंपरिक पेशों में संलग्न व्यक्तियों की संख्या धीरे-धीरे कम हो रही है, फिर भी ये पेशे ग्रामीण सामाजिक-सांस्कृतिक संरचना का महत्वपूर्ण अंग बने हुए हैं।

सारणी 7: आधुनिकीकरण के प्रभाव से पेशागत परिवर्तन की स्थिति

स्थिति	ग्रामीण	नगरीय	कुल
पारंपरिक पेशा जारी	42	18	60
नया पेशा अपनाया	35	60	95
आंशिक परिवर्तन	13	12	25
कुल	90	90	180

सारणी से यह स्पष्ट होता है कि आधुनिकीकरण, शिक्षा के प्रसार तथा नगरीकरण के प्रभाव से जातिगत कार्यशैली में महत्वपूर्ण परिवर्तन हो रहे हैं। ग्रामीण क्षेत्रों में 42 उत्तरदाता अभी भी अपने पारंपरिक पेशों से जुड़े हुए हैं, जबकि 35 उत्तरदाताओं ने नए पेशों को अपनाया है। इसके अतिरिक्त 13 उत्तरदाताओं ने आंशिक रूप से पेशागत परिवर्तन किया है, अर्थात वे पारंपरिक और आधुनिक दोनों प्रकार के कार्यों से जुड़े हुए हैं। दूसरी ओर नगरीय क्षेत्रों में पेशागत परिवर्तन की प्रवृत्ति अधिक स्पष्ट दिखाई देती है, जहाँ 60 उत्तरदाताओं ने पारंपरिक पेशों को छोड़कर नए रोजगारों को अपनाया है। यह स्थिति दर्शाती है कि शिक्षा, तकनीकी संसाधनों की उपलब्धता तथा बाजार आधारित आर्थिक अवसरों के विस्तार ने पेशागत गतिशीलता को बढ़ावा दिया है। इस प्रकार आधुनिक सामाजिक प्रक्रियाएँ पारंपरिक जातिगत पेशागत संरचना को धीरे-धीरे परिवर्तित कर रही हैं।

© 2026 डॉ. गुन्जन त्रिपाठी. This is an open-access article distributed under the terms of the Creative Commons Attribution 4.0 International License (CC BY NC ND).https://creativecommons.org/licenses/by/4.0/

सारणी 8: ग्रामीण एवं नगरीय क्षेत्रों में जाति आधारित पेशागत संरचना की स्थिति

स्थिति	ग्रामीण	नगरीय	कुल
जाति के अनुसार पेशा	48	20	68
आंशिक रूप से जाति आधारित	27	30	57
जाति से स्वतंत्र पेशा	15	40	55
कुल	90	90	180

सारणी से स्पष्ट होता है कि ग्रामीण और नगरीय क्षेत्रों में जाति आधारित पेशागत संरचना में महत्वपूर्ण अंतर पाया जाता है। ग्रामीण क्षेत्रों में 48 उत्तरदाता अभी भी अपने पारंपरिक जातिगत पेशों से जुड़े हुए हैं, जबकि नगरीय क्षेत्रों में ऐसे उत्तरदाताओं की संख्या केवल 20 है। इसके अतिरिक्त 27 ग्रामीण और 30 नगरीय उत्तरदाताओं ने यह स्वीकार किया कि उनके पेशे आंशिक रूप से जातिगत पृष्ठभूमि से प्रभावित हैं। वहीं 15 ग्रामीण तथा 40 नगरीय उत्तरदाताओं के पेशे जाति से स्वतंत्र पाए गए। यह स्थिति दर्शाती है कि नगरीकरण, शिक्षा तथा आधुनिक आर्थिक अवसरों के विस्तार के कारण नगरीय क्षेत्रों में पेशागत चयन में जाति की भूमिका अपेक्षाकृत कम होती जा रही है, जबकि ग्रामीण क्षेत्रों में यह संबंध अभी भी आंशिक रूप से विद्यमान है।

सारणी 9: जजमानी व्यवस्था की वर्तमान स्थिति

स्थिति	ग्रामीण	नगरीय	कुल
अभी भी प्रचलित	30	5	35
आंशिक रूप से प्रचलित	40	20	60
लगभग समाप्त	20	65	85
कुल	90	90	180

उपरोक्त सारणी से स्पष्ट होता है कि ग्रामीण क्षेत्रों में जजमानी व्यवस्था का कुछ अंश अभी भी विद्यमान है। 30 ग्रामीण उत्तरदाताओं के अनुसार यह व्यवस्था अभी भी प्रचलित है, जबकि 40 उत्तरदाताओं ने इसे आंशिक रूप से विद्यमान माना है। इसके विपरीत नगरीय क्षेत्रों में केवल 5 उत्तरदाताओं ने इसे प्रचलित बताया, जबकि 65 उत्तरदाताओं के अनुसार यह व्यवस्था लगभग समाप्त हो चुकी है। कुल मिलाकर 85 उत्तरदाताओं ने यह स्वीकार किया कि वर्तमान समय में जजमानी व्यवस्था लगभग समाप्त हो चुकी है। यह स्थिति इस तथ्य को दर्शाती है कि आधुनिक आर्थिक संरचना, नगरीकरण तथा बाजार आधारित लेन-देन के विस्तार ने पारंपरिक सेवा संबंधों को काफी हद तक कमजोर कर दिया है।

सारणी 10: ग्रामीण संस्कृति में परिवर्तन के प्रति उत्तरदाताओं की धारणा

धारणा	ग्रामीण	नगरीय	कुल
परंपरा अधिक प्रभावी	35	15	50
परंपरा और आधुनिकता दोनों	40	45	85
आधुनिकता अधिक प्रभावी	15	30	45
कुल	90	90	180

सारणी से स्पष्ट होता है कि अधिकांश उत्तरदाताओं के अनुसार वर्तमान सामाजिक जीवन में परंपरा और आधुनिकता दोनों का संयुक्त प्रभाव दिखाई देता है। कुल 85 उत्तरदाताओं ने यह मत व्यक्त किया कि ग्रामीण समाज में पारंपरिक मूल्य और आधुनिक जीवनशैली साथ-साथ विद्यमान हैं। वहीं 50 उत्तरदाताओं के अनुसार परंपरा का प्रभाव अभी भी अधिक है, जबकि 45 उत्तरदाताओं का मानना है कि आधुनिकता का प्रभाव बढ़ता जा रहा है। ग्रामीण क्षेत्रों में परंपरा का प्रभाव अपेक्षाकृत अधिक दिखाई देता है, जबकि नगरीय क्षेत्रों में आधुनिक जीवनशैली का प्रभाव अधिक स्पष्ट है। इससे यह निष्कर्ष निकलता है कि ग्रामीण संस्कृति में परिवर्तन की प्रक्रिया क्रमिक है, जिसमें परंपरा और आधुनिकता दोनों का सह-अस्तित्व दिखाई देता है।

6. निष्कर्ष

प्रस्तुत अध्ययन का उद्देश्य ग्रामीण समाज में जातिगत कार्यशैली की पारंपरिक संरचना का अध्ययन करना, आधुनिकीकरण, शिक्षा और नगरीकरण के प्रभाव से उसमें आए परिवर्तनों का विश्लेषण करना तथा ग्रामीण और नगरीय क्षेत्रों की पेशागत संरचना का तुलनात्मक परीक्षण करना था। अध्ययन से यह स्पष्ट होता है कि भारतीय ग्रामीण समाज में पारंपरिक जाति-आधारित पेशागत व्यवस्था में धीरे-धीरे परिवर्तन हो रहा है, हालांकि इसका पूर्णतः लोप अभी नहीं हुआ है। अध्ययन के परिणाम दर्शाते हैं कि ग्रामीण क्षेत्रों में कृषि अभी भी प्रमुख आजीविका का साधन है तथा कुछ पारंपरिक सेवा-प्रधान पेशे जैसे नाई, कुम्हार, लोहार और धोबी अभी भी किसी न किसी रूप में विद्यमान हैं। किंतु शिक्षा के प्रसार, आधुनिक संचार साधनों की उपलब्धता तथा नगरीकरण के प्रभाव के कारण नई पीढ़ी पारंपरिक पेशों से हटकर आधुनिक रोजगार के अवसरों की ओर अग्रसर हो रही है। तुलनात्मक विश्लेषण से यह भी स्पष्ट हुआ कि नगरीय क्षेत्रों में पेशागत चयन अपेक्षाकृत अधिक स्वतंत्र है, जहाँ जाति की भूमिका कम होती जा रही है। इसके विपरीत ग्रामीण क्षेत्रों में जाति और पेशे के बीच संबंध अभी भी आंशिक रूप से विद्यमान है। इसी प्रकार पारंपरिक जजमानी व्यवस्था, जो कभी ग्रामीण समाज की महत्वपूर्ण आर्थिक और सामाजिक संस्था थी, वर्तमान समय में काफी हद तक कमजोर पड़ चुकी है और इसके स्थान पर बाजार आधारित आर्थिक संबंध विकसित हो गए हैं। समग्र रूप से यह निष्कर्ष निकलता है कि ग्रामीण समाज में परंपरा और आधुनिकता के बीच अंतःक्रिया के परिणामस्वरूप एक नई सामाजिक-आर्थिक संरचना विकसित हो रही है। ग्रामीण संस्कृति में परिवर्तन की प्रक्रिया क्रमिक है, जिसमें पारंपरिक मूल्य और आधुनिक प्रवृत्तियाँ दोनों साथ-साथ विद्यमान हैं।

7. सुझाव

अध्ययन के निष्कर्षों के आधार पर ग्रामीण समाज में सकारात्मक सामाजिक परिवर्तन को प्रोत्साहित करने तथा पेशागत गतिशीलता को सुदृढ़ बनाने के लिए निम्नलिखित सुझाव प्रस्तुत किए जा सकते हैं।

- **शिक्षा का व्यापक प्रसार:** ग्रामीण क्षेत्रों में गुणवत्तापूर्ण शिक्षा की उपलब्धता बढ़ाई जानी चाहिए, क्योंकि शिक्षा सामाजिक जागरूकता और पेशागत गतिशीलता को बढ़ाने का प्रमुख माध्यम है। विशेष रूप से तकनीकी एवं व्यावसायिक शिक्षा को प्रोत्साहित किया जाना आवश्यक है।
- **कौशल विकास कार्यक्रमों का विस्तार:** ग्रामीण युवाओं के लिए विभिन्न कौशल विकास योजनाओं एवं प्रशिक्षण कार्यक्रमों को बढ़ावा दिया जाना चाहिए, जिससे वे पारंपरिक पेशों के अतिरिक्त आधुनिक रोजगार के अवसरों को भी अपनाने में सक्षम हो सकें।

© 2026 डॉ. गुन्जन त्रिपाठी. This is an open-access article distributed under the terms of the Creative Commons Attribution 4.0 International License (CC BY NC ND).https://creativecommons.org/licenses/by/4.0/

- **पारंपरिक कारीगरों का संरक्षण और प्रोत्साहन:** कुम्हार, लोहार, बुनकर तथा अन्य पारंपरिक कारीगरों के कौशल को संरक्षित करने के लिए सरकारी एवं गैर-सरकारी स्तर पर विशेष योजनाएँ लागू की जानी चाहिए, ताकि उनकी आजीविका सुरक्षित रह सके और पारंपरिक कला एवं शिल्प का संरक्षण हो सके।
- **ग्रामीण उद्योगों का विकास:** ग्रामीण क्षेत्रों में लघु एवं कुटीर उद्योगों को प्रोत्साहित करने से स्थानीय स्तर पर रोजगार के अवसर बढ़ेंगे और लोगों को अपने क्षेत्र में ही आजीविका के साधन उपलब्ध हो सकेंगे।
- **सामाजिक समानता और जागरूकता को बढ़ावा:** जातिगत भेदभाव को कम करने और सामाजिक समानता को प्रोत्साहित करने के लिए सामाजिक जागरूकता कार्यक्रमों, शिक्षा तथा सामुदायिक संवाद को बढ़ावा दिया जाना चाहिए।
- **ग्रामीण–नगरीय संपर्क को मजबूत करना:** परिवहन, संचार और डिजिटल सुविधाओं के विस्तार से ग्रामीण क्षेत्रों को नगरीय क्षेत्रों से अधिक प्रभावी रूप से जोड़ा जा सकता है, जिससे आर्थिक अवसरों और सामाजिक गतिशीलता में वृद्धि होगी।

संदर्भ सूची

1. Ambedkar Nagar district population census 2011. Available from: https://www.census2011.co.in/census/district/549-ambedkar-nagar.html
2. Deshpande S. Contemporary India: A sociological view. New Delhi: Penguin Books; 2003.
3. Dirks NB. Castes of mind: Colonialism and the making of modern India. Princeton: Princeton University Press; 2001.
4. Durkheim E. The division of labor in society. Halls WD, translator. New York: The Free Press; 1984. (Original work published 1893).
5. Ghurye GS. Caste and race in India. 5th ed. Bombay: Popular Prakashan; 1969.
6. Jeffrey C, Jeffery P, Jeffery R. Degrees without freedom? Education, masculinities, and unemployment in North India. Stanford: Stanford University Press; 2008.
7. Jodhka SS. Caste. New Delhi: Oxford University Press; 2012.
8. Krishna A. Escaping poverty and becoming poor: Who gains, who loses, and why? World Development. 2004;32(1):121-136. Available from: https://doi.org/10.1016/j.worlddev.2003.08.002
9. Lewis O. Village life in Northern India. Urbana: University of Illinois Press; 1958.
10. Marx K. Capital: A critique of political economy. Vol. 1. Fowkes B, translator. London: Penguin Books; 1976. (Original work published 1867).
11. Singh Y. Modernization of Indian tradition. Delhi: Thomson Press Limited; 1973.
12. Srinivas MN. Caste in modern India: And other essays. Bombay: Asia Publishing House; 1962.
13. Srinivas MN. Social change in modern India. Berkeley: University of California Press; 1966.
14. Subramanian A. The caste of merit: Engineering education in India. Cambridge: Harvard University Press; 2019.
15. Thorat S, Newman KS. Blocked by caste: Economic discrimination in modern India. New Delhi: Oxford University Press; 2010.
16. Wiser WH. The Hindu Jajmani system. Lucknow: Lucknow Publishing House; 1936.

Creative Commons (CC) License

This article is an open-access article distributed under the terms and conditions of the Creative Commons Attribution–Non-commercial–No Derivatives 4.0 International (CC BY-NC-ND 4.0) license. This license permits sharing and redistribution of the article in any medium or format for non-commercial purposes only, provided that appropriate credit is given to the original author(s) and source. No modifications, adaptations, or derivative works are permitted under this license.

About the Author

डॉ. गुन्जन त्रिपाठी समाजशास्त्र विभाग में सहायक प्राध्यापक के रूप में आदर्श कन्या स्नातकोत्तर महाविद्यालय, जियापुर, टाण्डा (अम्बेडकर नगर), उत्तर प्रदेश में कार्यरत हैं, जो डॉ. राममनोहर लोहिया अवध विश्वविद्यालय, अयोध्या से संबद्ध है। उनकी रुचि समाजशास्त्रीय अध्ययन, सामाजिक परिवर्तन, लैंगिक मुद्दों एवं समकालीन सामाजिक शोध में है।

© 2026 डॉ. गुन्जन त्रिपाठी. This is an open-access article distributed under the terms of the Creative Commons Attribution 4.0 International License (CC BY NC ND).https://creativecommons.org/licenses/by/4.0/